श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

काल भैरव जयन्ती

१२-११-२०२५ – कार्तिक कृष्ण अष्टमी

काल भैरव – रक्षा साधना - स्वरक्षा-आत्म रक्षा एवं परिवार की रक्षा हेतु

विधान: रक्षा हेतु काल भैरव रक्षा साधना श्रेष्ठ मानि गयी है | इस विधान में साधक / साधिका ११ दीपक ले | इस दीपक में कोई भी तेल का प्रयोग किया जा सकता है | साधक लाल वस्त्र धारण कर किसी एकन्त कक्ष में बिचो-बीच बैठ जाय और अपने चारो तरफ आठ दीपक आठो दिशाओं मे जला ले और अपने सामने तीन दीपक रख ले | सर्व प्रथम गुरु पूजन कर गुरु मंत्र की चार माला जप कर ले और गुरुजी से मानसिक आज्ञा एवं अनुमती ले ले |

जमीन पर आठो दिशाओं मे चावल की डेरीयां बनाये और उन पर आठ दीपक स्थापित कर दे | और अपने सामने भी तीनों डेरीयों पर तीन दीपक उसी तरह रख दे | सभी ११ दीपक जला लें और उनकी सामान्य पुजन करे (कुंकुम,अक्षत,धुप,एवं प्रसाद) | और साधक इन दीपकों के बिचो-बीच बैठ कर ११ माला निम्न मंत्र का जप करे |

मंत्र: || ॐ भैरव भयंकर हर मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ||

सामाग्री: मुंगा माला

जप संख्या: ११ माला

मुंगा माला से जप पूर्ण करे और बाद मे पुन: सभी दीपकों का अक्षत एवं पुष्प से पूजन करे , उन्हे भैरव मान कर रक्षा की प्रार्थना करे | ध्यान रखे की साधना के बीच मे उठे नही और दीपक जलते रहे | यह विधान अपना ने से मनोवाञ्छित इच्छा पूर्ण होती ही है |

****